IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत स्नातकोत्तर स्तर पर लागू सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

अमित गंगवार
शोध छात्र (शिक्षा विभाग)
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय ,बरेली (उ०प्र०)

प्रो. सुधीर कुमार वर्मा
शिक्षा विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय ,बरेली (उ०प्र०)

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को ज्ञान के सीमित दायरे से बाहर निकालकर उसे कौशल, नवाचार, रचनात्मकता और व्यवहारिक उपयोगिता से जोड़ना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उच्च शिक्षा में परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को प्रमुखता से लागू करने का प्रस्ताव किया गया है। सेमेस्टर प्रणाली पारंपरिक वार्षिक परीक्षा प्रणाली से भिन्न है, जिसमें विद्यार्थी का मूल्यांकन पूरे शैक्षणिक वर्ष के स्थान पर छोटे-छोटे शैक्षणिक सत्रों में किया जाता है। सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का मूल आधार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation) है। इसमें विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता का नियमित आकलन किया जाता है। इस प्रणाली के अंतर्गत आंतरिक मूल्यांकन, असाइनमेंट, परियोजना कार्य, प्रस्तुति, सेमिनार तथा लिखित परीक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति को मापा जाता है। इससे न केवल परीक्षा का दबाव कम होता है, बल्कि विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन, आत्मअनुशासन और अकादमिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित होती है। हालाँकि, सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली अनेक सकारात्मक पक्षों के साथ-साथ कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। शिक्षण संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, समय-सारणी का दबाव, मूल्यांकन में निष्पक्षता तथा संस्थागत आधारभूत संरचना की सीमाएँ इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक बनती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के महाविद्यालयों में इन समस्याओं का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। अध्ययन का उद्देश्य इस प्रणाली के लाभ, सीमाएँ एवं संभावनाओं को स्पष्ट करना तथा उच्च शिक्षा में इसकी उपयोगिता का सम्यक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। साथ ही यह शोध-पत्र नीति-निर्माताओं, शिक्षकों एवं शैक्षणिक प्रशासकों के लिए उपयोगी सुझाव भी प्रदान करता है, जिससे सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके।

कुंजी - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सेमेस्टर प्रणाली, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का मूल आधार होती है। किसी देश की प्रगति उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता, प्रासंगिकता और प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप समय-समय पर सामाजिक आवश्यकताओं, वैश्विक परिवर्तनों और तकनीकी विकास के अनुरूप बदलता रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय शिक्षा प्रणाली में अनेक आयोगों और नीतियों के माध्यम से सुधार किए गए, जिनमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा उसके संशोधित शिक्षा नीति 1992 का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित समाज, सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कौशल आधारित अर्थव्यवस्था के बढ़ते प्रभाव ने शिक्षा व्यवस्था को अधिक लचीला, व्यावहारिक और रोजगारोन्मुख बनाने की आवश्यकता को जन्म दिया। इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया गया। यह नीति भारतीय शिक्षा व्यवस्था में संरचनात्मक और वैचारिक दोनों स्तरों पर व्यापक परिवर्तन प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख फोकस उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, बहुविषयक दृष्टिकोण, अकादमिक लचीलापन, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण तथा मूल्यांकन प्रणाली में सुधार पर है। इसी संदर्भ में परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को अपनाने पर विशेष बल दिया गया है। सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली शिक्षा को केवल अंतिम परीक्षा तक सीमित न रखकर सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का निरंतर मूल्यांकन सुनिश्चित करती है। पारंपरिक वार्षिक परीक्षा प्रणाली में

विद्यार्थियों का मूल्यांकन वर्ष के अंत में एक या दो परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता था, जिससे रटने की प्रवृत्ति, परीक्षा-केंद्रित अध्ययन और मानसिक दबाव बढ़ता था। इसके विपरीत, सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को पूरे शैक्षणिक सत्र में सक्रिय रूप से सीखने के लिए प्रेरित करती है। यह प्रणाली ज्ञान के साथ-साथ कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान और सृजनात्मकता के विकास पर भी बल देती है। परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली का उद्देश्य उच्च शिक्षा को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना है, ताकि विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो सकें। इसके माध्यम से शिक्षा को रोजगारोन्मुख, नवाचार आधारित और जीवनोपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। साथ ही यह प्रणाली विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच निरंतर संवाद और सहभागिता को भी बढ़ावा देती है। हालाँकि, सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का सफल क्रियान्वयन केवल नीति निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, सुदृढ़ मूल्यांकन प्रणाली और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था की भी आवश्यकता होती है। यदि इन पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाए, तो यह प्रणाली अपेक्षित परिणाम देने में असफल हो सकती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि परास्नातक स्तर पर लागू सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए।

सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक परिदृश्य

सेमेस्टर परीक्षा शिक्षा प्रणाली का विकास शिक्षा में निरंतरता, लचीलापन और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हुआ है। प्रारंभिक काल में शिक्षा मुख्यतः वार्षिक परीक्षा प्रणाली पर आधारित थी, जिसमें विद्यार्थियों का मूल्यांकन वर्ष के अंत में एक या दो परीक्षाओं के माध्यम से किया जाता था। यह प्रणाली लंबे समय तक प्रभावी मानी गई, परंतु बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों और वैश्विक शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा के साथ इसकी सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं। सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का प्रारंभ सर्वप्रथम पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका और यूरोप में हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उच्च शिक्षा संस्थानों ने महसूस किया कि वार्षिक परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के वास्तविक ज्ञान और कौशल का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पा रही है। इसके परिणामस्वरूप शैक्षणिक वर्ष को दो समान भागों— प्रथम सेमेस्टर और द्वितीय सेमेस्टर—में विभाजित किया गया। इस प्रणाली ने छात्रों को विषयों को चरणबद्ध रूप से समझने, नियमित अध्ययन करने तथा समय-समय पर अपने प्रदर्शन में सुधार करने का अवसर प्रदान किया। धीरे-धीरे यह प्रणाली विश्व के अधिकांश विकसित और विकासशील देशों में उच्च शिक्षा का मानक बन गई।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली

भारत में सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का आरंभ सीमित रूप में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों जैसे—आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कॉलेजों—में हुआ। इन संस्थानों में वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षा देने के लिए सेमेस्टर प्रणाली को प्रभावी माना गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने समय-समय पर उच्च शिक्षा में सुधार हेतु सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को अपनाने की सिफारिश की। वर्ष 2009 के बाद अनेक केंद्रीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों ने इसे स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर लागू करना प्रारंभ किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को उच्च शिक्षा के लिए अनिवार्य एवं संरचनात्मक रूप से सुदृढ़ बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। इस नीति में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC), बहुविषयक शिक्षा, क्रेडिट ट्रांसफर और लचीले पाठ्यक्रम जैसी अवधारणाओं को सेमेस्टर प्रणाली से जोड़ा गया है। इससे सेमेस्टर प्रणाली न केवल मूल्यांकन की पद्धति बनी, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार बन गई। सेमेस्टर प्रणाली का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें विद्यार्थी का मूल्यांकन पूरे सत्र में विभिन्न माध्यमों से किया जाता है—जैसे आंतरिक परीक्षा, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट, सेमिनार एवं प्रस्तुति। इससे विद्यार्थी की वास्तविक शैक्षणिक क्षमता का आकलन संभव होता है। चूँकि सेमेस्टर प्रणाली में पाठ्यक्रम सीमित अवधि में पूरा किया जाता है, इसलिए विद्यार्थी नियमित रूप से अध्ययन करने के लिए प्रेरित होते हैं। इससे रटने की प्रवृत्ति कम होती है और गहन अध्ययन को बढ़ावा मिलता है। वार्षिक परीक्षा प्रणाली में एक ही परीक्षा पर पूरा परिणाम निर्भर करता था, जिससे मानसिक दबाव बढ़ता था। सेमेस्टर प्रणाली में यह दबाव विभाजित हो जाता है, जिससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है। सेमेस्टर प्रणाली परियोजना कार्य, केस स्टडी, प्रयोगात्मक गतिविधियों और समूह चर्चा को प्रोत्साहित करती है। इससे विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, संचार और टीमवर्क जैसे कौशल विकसित होते हैं। सेमेस्टर प्रणाली अंतरराष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के अनुरूप है, जिससे विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा और रोजगार के वैश्विक अवसर प्राप्त करने में सुविधा होती है। सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली एक प्रगतिशील और विद्यार्थी-केंद्रित व्यवस्था है, जो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में सक्षम है।

सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली की चुनौतियाँ

सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को उच्च शिक्षा में गुणवत्ता, लचीलापन और सतत मूल्यांकन सुनिश्चित करने हेतु अपनाया गया है। यद्यपि यह प्रणाली अनेक दृष्टियों से लाभकारी है, तथापि इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई प्रकार की व्यावहारिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों की अनदेखी करने से सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली अपने उद्देश्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाती। प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं—सेमेस्टर प्रणाली के सफल संचालन के लिए पर्याप्त कक्षा-कक्ष, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, डिजिटल संसाधन तथा आईसीटी सुविधाएँ आवश्यक होती हैं। भारत के अनेक महाविद्यालयों, विशेषकर ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, इन संसाधनों का अभाव देखा जाता है। सीमित सुविधाओं के कारण नियमित कक्षाएँ, प्रायोगिक कार्य और आंतरिक मूल्यांकन सुचारु रूप से संचालित नहीं हो पाते, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। सेमेस्टर प्रणाली में शिक्षक की भूमिका केवल पाठ पढ़ाने तक सीमित नहीं होती, बल्कि उन्हें मार्गदर्शक, मूल्यांकनकर्ता और प्रेरक की भूमिका भी निभानी होती है। इसके लिए शिक्षकों को नवीन शिक्षण पद्धतियों, सतत मूल्यांकन तकनीकों और डिजिटल उपकरणों का प्रशिक्षण आवश्यक है। किंतु कई संस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण सेमेस्टर प्रणाली का प्रभाव सीमित रह जाता है। सेमेस्टर प्रणाली में आंतरिक मूल्यांकन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। असाइनमेंट, प्रोजेक्ट, उपस्थिति और आंतरिक परीक्षाओं के आधार पर अंक प्रदान किए जाते हैं। कई बार इसमें पक्षपात, व्यक्तिपरकता और असमानता की शिकायतें सामने आती हैं। पारदर्शी मूल्यांकन तंत्र के अभाव में विद्यार्थियों का विश्वास कमजोर होता है और व्यवस्था की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। सेमेस्टर प्रणाली में सीमित समय में पाठ्यक्रम पूरा करने का दबाव शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों पर पड़ता है। अल्प अवधि में अधिक विषय-वस्तु को समाहित करने से

गहन अध्ययन, चिंतन और शोध की प्रक्रिया प्रभावित होती है। कई बार पाठ्यक्रम केवल औपचारिक रूप से पूरा कर दिया जाता है, जिससे अधिगम की गुणवत्ता घट जाती है। हालाँकि सेमेस्टर प्रणाली परीक्षा तनाव को कम करने का दावा करती है, परंतु वास्तविकता में लगातार परीक्षाएँ, असाइनमेंट और प्रोजेक्ट विद्यार्थियों पर निरंतर दबाव बनाए रखते हैं। कमजोर शैक्षणिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के लिए यह प्रणाली अधिक चुनौतीपूर्ण सिद्ध होती है, जिससे उनमें मानसिक तनाव और शैक्षणिक असंतोष उत्पन्न हो सकता है। सेमेस्टर प्रणाली के प्रभावी संचालन के लिए समय पर परीक्षा आयोजन, परिणाम घोषित करना, क्रेडिट प्रबंधन और अकादमिक कैलेंडर का पालन अत्यंत आवश्यक होता है। किंतु कई विश्वविद्यालयों में प्रशासनिक अक्षमता, तकनीकी समस्याएँ और मानव संसाधन की कमी के कारण इन प्रक्रियाओं में विलंब होता है, जिससे संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था प्रभावित होती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सभी क्षेत्रों में समान शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट सुविधा और आर्थिक संसाधनों की कमी से सेमेस्टर प्रणाली का क्रियान्वयन कठिन हो जाता है। इससे शिक्षा में असमानता बढ़ने की संभावना रहती है। सेमेस्टर प्रणाली के सफल संचालन के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों में सकारात्मक दृष्टिकोण और अनुकूल मानसिकता आवश्यक है। पारंपरिक वार्षिक परीक्षा प्रणाली की आदत के कारण कई शिक्षक और विद्यार्थी इस परिवर्तन को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाते, जिससे व्यवस्था के प्रति नकारात्मकता उत्पन्न होती है। कई बार सेमेस्टर प्रणाली में गुणवत्ता के स्थान पर औपचारिकताओं और अंकों की संख्या पर अधिक ध्यान दिया जाता है। अधिक असाइनमेंट और परीक्षाओं के बावजूद वास्तविक सीखने की प्रक्रिया कमजोर रह जाती है। इससे सेमेस्टर प्रणाली का मूल उद्देश्य प्रभावित होता है। यद्यपि सेमेस्टर प्रणाली कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की बात करती है, परंतु अनेक संस्थानों में उद्योग और रोजगार जगत से पर्याप्त समन्वय नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप विद्यार्थी व्यवहारिक अनुभव और वास्तविक कौशल विकास से वंचित रह जाते हैं। स्पष्ट है कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली उच्च शिक्षा में सुधार की एक महत्वपूर्ण पहल है, किंतु इसकी सफलता इसके प्रभावी और संतुलित क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। जब तक आधारभूत संरचना, शिक्षक प्रशिक्षण, निष्पक्ष मूल्यांकन और प्रशासनिक दक्षता पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक यह प्रणाली अपने उद्देश्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सकेगी। अतः आवश्यक है कि इन चुनौतियों का समाधान नीति-निर्माण और क्रियान्वयन दोनों स्तरों पर किया जाए।

साहित्य समीक्षा

रहमान (2013) ने *सेमेस्टर प्रणाली के प्रति छात्रों एवं शिक्षकों की धारणा* विषय पर असम के नगांव जिले के नगांव टाउन के कुछ चयनित डिग्री कॉलेजों में एक अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में यादृच्छिक रूप से चुने गए 133 परास्नातक छात्रों एवं 44 शिक्षकों को शामिल किया गया। सेमेस्टर सिस्टम के पाँच आयामों—पाठ्यचर्या-पाठ्यक्रम कवरेज, कक्षाओं की नियमितता, अध्यापक एवं शिक्षण के तरीके, मूल्यांकन एवं प्रतिक्रिया तथा संसाधनों की उपलब्धता—के प्रति धारणा को व्यक्त करने वाली स्व-निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। एकत्रित किए गए आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य तथा मानक विचलन की सहायता से किया गया। परिणामों में पाया गया कि आंतरिक मूल्यांकन एवं समग्र मूल्यांकन के प्रति छात्रों की धारणा पर्याप्त रूप से संतोषजनक नहीं है।

डांगी, नवराज (2016) ने *सेमेस्टर प्रणाली के कार्यान्वयन के प्रति छात्रों का रवैया* विषय पर अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य सेमेस्टर प्रणाली के कार्यान्वयन के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का पता लगाना था। शोधकर्ता द्वारा 120 छात्रों से प्राप्त आँकड़ों का माध्य (Mean) एवं काई-वर्ग (Chi-Square) परीक्षण जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर व्यवस्थित, सारणीबद्ध तथा विश्लेषण कर व्याख्या की गई। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि छात्रों का सेमेस्टर प्रणाली के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।

मुनावर एवं अवान (2019) ने *पाकिस्तान के सार्वजनिक क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर प्रणाली की समस्याएँ* विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति को अपनाते हुए नमूने में बीजेडयू, यूओई एवं यूओजी के शिक्षा विभागों से परास्नातकोत्तर स्तर के 300 छात्र (150 पुरुष एवं 150 महिला) शामिल किए गए। शोधकर्ताओं ने छात्रों के लिए SSQ-5 नामक 30 कथनों वाली प्रश्नावली विकसित की। वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग कथनवार प्रतिशत, माध्य अंक तथा प्रश्नावली का मानक विचलन प्राप्त करने हेतु किया गया। टी-परीक्षण का उपयोग पुरुष एवं महिला छात्रों की राय के बीच अंतर जानने के लिए किया गया। निष्कर्षों में पाया गया कि सेमेस्टर प्रणाली सीखने, छात्रों पर ध्यान केंद्रित करने, पाठ्यक्रम सामग्री को पूरा करने तथा छात्रों की प्रतिक्रिया के अनुकूल है।

गोगोई (2019) ने *सामान्य डिग्री पाठ्यक्रम में परास्नातक स्तर पर छात्रों के सेमेस्टर सिस्टम के प्रति दृष्टिकोण* पर अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय को जनसंख्या के रूप में चुना गया। परास्नातक स्तर पर 1082 छात्रों को उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि द्वारा अध्ययन हेतु चुना गया। अध्ययन में स्व-निर्मित दृष्टिकोण मापनी (लिकर्ट प्रकार) का उपयोग किया गया तथा परिकल्पना परीक्षण के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। निष्कर्षों में पाया गया कि कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र सेमेस्टर प्रणाली के प्रति अपने दृष्टिकोण में पर्याप्त भिन्नता रखते हैं। साथ ही कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। सामान्य डिग्री पाठ्यक्रम के परास्नातक स्तर पर सभी छात्रों का सेमेस्टर प्रणाली के प्रति अनुकूल रवैया पाया गया।

ऐथल, पी. एस., एवं ऐथल, एस. (2019). शोधपत्र भारत की उच्च शिक्षा नीतियों, उनके प्रभावों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रारूप की प्रमुख विशेषताओं का विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से अध्ययन करता है। इसमें विशेष रूप से उच्च शिक्षा खंड पर जोर देते हुए नए प्रस्तावों की पूर्ववर्ती शिक्षा नीतियों से तुलना की गई है। साथ ही, निजी और सार्वजनिक उच्च शिक्षण संस्थानों पर NEP 2020 के संभावित प्रभावों—सुविधाओं और प्रतिबंधों के संदर्भ में—का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में विभिन्न हितधारकों के दृष्टिकोण से नई नीति की ताकतों और कमजोरियों की पहचान की गई है तथा नीति को प्रभावी, दोषरहित और देश की प्रगति में सहायक बनाने हेतु उपयुक्त सुझाव हैं।

नियोग (2020) ने गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत सोनितपुर ज़िले के महाविद्यालयों के विशेष संदर्भ में परास्नातक उपाधि स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली की प्रभावशीलता पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में प्रयुक्त पद्धति वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति थी। सोनितपुर ज़िले के 150 परास्नातक छात्रों को नमूने में शामिल किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप यह देखा गया कि विश्वविद्यालयों के लिए सेमेस्टर प्रणाली की प्रभावशीलता सुनिश्चित करना अभी भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

ऐथल, एस., एवं ऐथल, एस. (2020) गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेजों का विकास, संस्थानों का पुनर्गठन व एकीकरण, बहु-विषयक शिक्षा, बेहतर सीखने का वातावरण, छात्र सहायता, नियामक सुधार, तकनीक का उपयोग तथा ऑनलाइन-डिजिटल शिक्षा जैसे भविष्यपरक पहलुओं पर चर्चा की गई है। विभिन्न चुनौतियों के बावजूद NEP-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु व्यावहारिक सिफारिशें प्रस्तुत की गई हैं, जिससे यह लेख नीति-निर्माण और कार्यान्वयन से जुड़े संस्थानों के लिए एक उपयोगी संदर्भ बनता है।

ऐथल, एस. (2020). उच्च शिक्षा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था, सामाजिक स्थिति, तकनीकी अपनाने की क्षमता तथा स्वस्थ मानवीय व्यवहार को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश के प्रत्येक नागरिक को उच्च शिक्षा से जोड़ने हेतु सकल नामांकन अनुपात (GER) में वृद्धि करना सरकार और शिक्षा विभाग की प्रमुख जिम्मेदारी है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी लक्ष्य की दिशा में अग्रसर है, जो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, आकर्षण और वहनीयता बढ़ाने के लिए नवोन्मेषी नीतियाँ प्रस्तुत करती है। साथ ही, निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान में गुणवत्ता बनाए रखने हेतु सख्त नियंत्रण व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है।

अख्तर, बी., एवं हाशमी, एम. ए. (2021). शिक्षा में दो परीक्षा प्रणालियाँ प्रचलित हैं—वार्षिक और सेमेस्टर प्रणाली। सेमेस्टर प्रणाली में समय की कमी, बढ़ती चिंता, प्रस्तुति कौशल की कमी और आत्मविश्वास का अभाव छात्रों की प्रमुख समस्याएँ हैं। बार-बार होने वाले आंतरिक मूल्यांकन और लंबा पाठ्यक्रम भी तनाव बढ़ाते हैं। इसलिए छात्रों को प्रस्तुति और असाइनमेंट के लिए उचित मार्गदर्शन देना आवश्यक है, ताकि सेमेस्टर प्रणाली अधिक प्रभावी बन सके।

पौडेल, पी. (2021).यह अध्ययन नेपाल की उच्च शिक्षा में कोविड-19 के दौरान और बाद में ऑनलाइन शिक्षा के लाभ, चुनौतियों और रणनीतियों का विश्लेषण करता है। ऑनलाइन शिक्षा को उपयोगी माना गया, परंतु इंटरनेट समस्या, समय प्रबंधन, सामाजिक अलगाव और तकनीकी तैयारी की कमी जैसी चुनौतियाँ सामने आई। अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि नेपाल के संदर्भ में ब्लेंडेड लर्निंग अधिक प्रभावी विकल्प है, जिसके लिए उपयुक्त ICT नीति और पाठ्यक्रम सुधार आवश्यक हैं।

जोशी, एस. एन. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान संदर्भ में अधिक प्रभावी और दूरदर्शी है। यह नीति गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के माध्यम से आर्थिक विकास, सामाजिक उन्नति, तकनीकी विकास और कौशल वृद्धि को बढ़ावा देती है। निजी क्षेत्र की भागीदारी, गुणवत्ता नियंत्रण, बहु-विषयक और स्वायत्त संस्थानों, शोध प्रोत्साहन तथा छात्र-केंद्रित शिक्षा के जरिए NEP-2020 का लक्ष्य 2030 तक उच्च शिक्षा प्रणाली को कौशल, शोध और दक्षता आधारित बनाना है।

कुमार, आर., एवं वर्मा, पी. एस. (2024). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र में व्यापक सुधार लाना है। यह नीति छात्रों को समग्र और बहुआयामी शिक्षा प्रदान करने पर बल देती है, जिसमें कौशल विकास, शोध और नवाचार को विशेष महत्व दिया गया है। सेमेस्टर प्रणाली इस नीति का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो छात्रों की अध्ययन आदतों को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत सेमेस्टर प्रणाली को ऐसी शैक्षिक व्यवस्था के रूप में विकसित किया जा रहा है, जो न केवल शैक्षणिक ज्ञान बल्कि कौशल विकास और व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक हो। यह प्रणाली छात्रों में आत्मनिर्णय और आत्मप्रबंधन की क्षमता विकसित करती है, क्योंकि वे अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार विषयों का चयन कर सकते हैं।

तारेके, टी. जी., वॅरिटा, जी. टी., ज़्रेवुडे, जी. टी., अमुकुने, एस., ओओ, टी. ज़्रेड., एवं जोज़सा, के. (2024). यह अध्ययन हंगरी की विज्ञान अकादमी के शैक्षिक अनुसंधान कार्यक्रम और सज़ेगेड विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान क्लस्टर के डिजिटल सोसाइटी कंपिटेंस सेंटर द्वारा वित्तपोषित किया गया। लेखकों का संबंध नए उपकरण और तकनीकें छात्रों के मूल्यांकन के अनुसंधान समूह से है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि परास्नातक स्तर पर लागू सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली उच्च शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रगतिशील पहल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत अपनाई गई यह प्रणाली पारंपरिक वार्षिक परीक्षा प्रणाली की सीमाओं को दूर करने का प्रयास करती है तथा शिक्षा को अधिक विद्यार्थी-केंद्रित, सतत, बहुआयामी और कौशल-आधारित बनाने की दिशा में अग्रसर है। सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति का संतुलित आकलन करने में सहायक सिद्ध होती है। इस प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों में नियमित अध्ययन, समय प्रबंधन, आत्मअनुशासन तथा अकादमिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। साथ ही, आंतरिक मूल्यांकन, परियोजना कार्य, सेमिनार एवं प्रस्तुति जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता और रचनात्मकता का विकास करती हैं। सेमेस्टर प्रणाली का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि यह परीक्षा-केंद्रित शिक्षा के स्थान पर अधिगम-केंद्रित शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। परीक्षा का भार पूरे शैक्षणिक सत्र में विभाजित होने से विद्यार्थियों पर मानसिक दबाव अपेक्षाकृत कम होता है तथा वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से सहभागिता करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह प्रणाली भारतीय उच्च शिक्षा को वैश्विक शैक्षणिक मानकों के अनुरूप बनाने में सहायक है, जिससे विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा एवं रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त हो सकते हैं। हालाँकि, अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है। आधारभूत संरचना की कमी, प्रशिक्षित एवं दक्ष शिक्षकों का अभाव, आंतरिक मूल्यांकन में निष्पक्षता की समस्या, समय-सारणी का अत्यधिक दबाव तथा प्रशासनिक जटिलताएँ इस प्रणाली की प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के महाविद्यालयों में संसाधनों और तकनीकी सुविधाओं की कमी से सेमेस्टर प्रणाली का समान रूप से क्रियान्वयन संभव नहीं हो पाता, जिससे शैक्षणिक असमानता बढ़ने की आशंका बनी रहती है। केवल सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली को लागू कर देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके साथ-साथ शिक्षकों के नियमित प्रशिक्षण, पारदर्शी एवं मानकीकृत मूल्यांकन प्रणाली, सुदृढ़ आधारभूत संरचना तथा प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था का विकास भी अनिवार्य है। यदि इन पहलुओं पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया, तो सेमेस्टर प्रणाली औपचारिकता मात्र बनकर रह सकती है और अपने मूल उद्देश्यों को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाएगी। अंततः यह कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर पर लागू सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली उच्च शिक्षा में सुधार की दिशा में एक सकारात्मक एवं आवश्यक कदम है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसे किस प्रकार संतुलित, समावेशी और व्यवहारिक रूप में लागू किया जाता है। यदि नीति-निर्माता, शैक्षणिक प्रशासक, शिक्षक और विद्यार्थी सभी मिलकर इसकी चुनौतियों का समाधान करें, तो सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली भारतीय उच्च शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, प्रभावी और भविष्य-उन्मुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

सन्दर्भ

- वर्मा, डी. एस. (2007). भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास. मेरठ: लाइन बुक डिपो।
- शर्मा, आर. एन. (2013). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- रहमान, ए., एवं पाठक, टी. (2013). सेमेस्टर प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की धारणा: असम के नागांव ज़िले के कुछ चयनित डिग्री महाविद्यालयों में किया गया एक अध्ययन। *परसेप्शन*, 4(1)।
- डांगी, एन. (2016). सेमेस्टर प्रणाली के क्रियान्वयन के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति।
- मुनव्वर, एस., एवं अवान, ए. जी. (2019). पाकिस्तान के सार्वजनिक क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर प्रणाली की समस्याएँ। *ग्लोबल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज*, 5(4), 812–835।
- गोगोई, पी. के. (2019). सामान्य डिग्री पाठ्यक्रम के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सेमेस्टर प्रणाली के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
- गुप्ता, एस. पी. (2020). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
- भारत सरकार. (2020). नई शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- ऐथल, एस., एवं ऐथल, एस. (2020). भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उच्च शिक्षा भाग के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु कार्यान्वयन रणनीतियाँ।
- ऐथल, एस. (2020). भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में विश्लेषण।
- भारत सरकार. (2020). *नई शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). *अस्थायी दिशा-निर्देश.* अयोध्या: डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय।
- लाल, उमा बिहारी. (2020). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत. इलाहाबाद: रजनी प्रकाशन।
- नेओग, ए. (2020). स्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली की प्रभावशीलता का अध्ययन: गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत सोनितपुर ज़िले के महाविद्यालयों के विशेष संदर्भ में. यूरोपियन जर्नल ऑफ मॉलिक्यूलर एंड क्लिनिकल मेडिसिन, 7(8)।
- अख्तर, बी. एवं हाशमी, एम. ए. (2021). सेमेस्टर प्रणाली के संदर्भ में विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का अध्ययन। *ग्लोबल सोशल साइंसेज रिव्यू, 6(1), 564–571।*

- पौडेल, पी. (2021).उच्च शिक्षा में कोविड-19 के दौरान और उसके बाद ऑनलाइन शिक्षा: लाभ, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ। *इंटरनेशनल जर्नल ऑन स्टडीज़ इन एजुकेशन .*
- जोशी, एस. एन. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और 2020 की संरचना के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन।
- कुमार, आर., एवं वर्मा, पी. एस. (2024). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली के संदर्भ में अध्ययन आदतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- तारेके, टी. जी., वॉरेटा, जी. टी., ज़ेवुडे, जी. टी., अमुकुने, एस., ओओ, टी. ज़ेड., एवं जोज़सा, के. (2024). इथियोपियाई सार्वजनिक उच्च शिक्षा का अवलोकन: प्रवृत्तियाँ, प्रणाली, चुनौतियाँ और गुणवत्ता से संबंधित मुद्दे। *एजुकेशन साइंसेस, 14(10), 1065.*
- आई. बी. पी. (n.d.). सभी विषयों के लिए जर्नल. http://www.ibp.world